NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 05-03-2026

विषय सूची

भारत–कनाडा संबंध: यूरेनियम आपूर्ति समझौता और सामरिक पुनर्संरेखण

एंथ्रॉपिक–अमेरिकी रक्षा विभाग के बीच एआई सुरक्षा पर टकराव

विश्व मोटापा एटलस 2026

संक्षिप्त समाचार

गोलिस्तान पैलेस

जुलाई के पश्चात एल नीनो की उच्च संभावना: WMO

समुद्र के क़ानून पर संयुक्त राष्ट्र अभिसमय (UNCLOS)

भारत द्वारा जापान के साथ द्विपक्षीय स्वैप व्यवस्था का नवीनीकरण

अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA)

न्यूक्लिक एसिड टेस्ट (NAT)

प्रोजेक्ट हनुमान(HANUMAN)

सुंगुड़ी साड़ियाँ

भारत–कनाडा संबंध: यूरेनियम आपूर्ति समझौता और सामरिक पुनर्संरेखण

संदर्भ

- हाल ही में भारत और कनाडा ने 1.9 अरब डॉलर मूल्य का 10-वर्षीय यूरेनियम आपूर्ति समझौता किया है तथा 2026 तक व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता (CEPA) को अंतिम रूप देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की है।
- यह दोनों देशों द्वारा कई वर्षों की राजनयिक तनातनी के बाद सामरिक विश्वास को पुनः स्थापित करने का प्रयास है।

भारत–कनाडा संबंध

- **राजनयिक संबंधों की स्थापना:** भारत और कनाडा ने 1947 में, भारत की स्वतंत्रता के तुरंत बाद, राजनयिक संबंध स्थापित किए।
  - दोनों देश *कॉमनवेल्थ ऑफ नेशन्स* के सदस्य हैं, जिसने प्रारंभिक राजनयिक संवाद को आकार दिया।
  - कनाडा ने 1947 में नई दिल्ली में अपना उच्चायोग खोला, जबकि भारत ने शीघ्र ही ओटावा में अपना मिशन स्थापित किया।
- **प्रारंभिक सहयोग (1950–1970 के दशक):** भारत और कनाडा ने विकास तथा परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में घनिष्ठ सहयोग बनाए रखा।
  - कनाडा ने भारत के शांतिपूर्ण परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम का समर्थन किया और CIRUS (कनाडा–भारत रिएक्टर, अमेरिका) अनुसंधान रिएक्टर उपलब्ध कराया।
  - 1960 के दशक में कनाडा ने राजस्थान परमाणु ऊर्जा परियोजना (RAPP) में रिएक्टर स्थापित करने में सहायता की।
- **1974 के बाद संबंधों में तनाव:** भारत द्वारा प्रथम परमाणु परीक्षण (पोखरण-I) करने के बाद संबंध खराब हो गए।
  - कनाडा ने आरोप लगाया कि CIRUS रिएक्टर से प्राप्त प्लूटोनियम का उपयोग परीक्षण में हुआ और उसने भारत के साथ परमाणु सहयोग निलंबित कर दिया।
- **क्रमिक सामान्यीकरण (2000 के दशक से आगे):** 21वीं सदी की शुरुआत में संबंध सुधारने लगे। प्रमुख घटनाक्रम:
  - 2008 का भारत–अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता और NSG छूट, जिसने भारत को अंतर्राष्ट्रीय परमाणु व्यापार में भाग लेने की अनुमति दी।
  - 2010 में भारत और कनाडा ने असैन्य परमाणु सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए।
  - 2015 में कनाडा ने कैमेको कॉर्पोरेशन के माध्यम से भारत को यूरेनियम आपूर्ति करने पर सहमति व्यक्त की।

भारत–कनाडा संबंधों की वर्तमान स्थिति

- **यूरेनियम आपूर्ति समझौता (2026):** कनाडा की कैमेको कॉर्पोरेशन 2027 से 2035 तक भारत को लगभग 10,000 टन यूरेनियम दीर्घकालिक अनुबंध के अंतर्गत आपूर्ति करेगी, जिसकी अनुमानित कीमत 1.9 अरब डॉलर होगी।
- **सामरिक ऊर्जा साझेदारी:** भारत और कनाडा ने एक *स्ट्रैटेजिक एनर्जी पार्टनरशिप* की घोषणा की, जिसमें शामिल हैं:
  - यूरेनियम आपूर्ति और परमाणु ऊर्जा सहयोग
  - नवीकरणीय ऊर्जा विकास
  - तरलीकृत पेट्रोलियम गैस (LPG) सहयोग
  - महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों में सहयोग
    - साथ ही, कनाडा ने भारत-नेतृत्व वाली दो वैश्विक पहलों – *अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA)* और *ग्लोबल बायोफ्यूल एलायंस* – में शामिल होने पर सहमति दी।
- **व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता (CEPA):** भारत और कनाडा ने CEPA वार्ता के लिए संदर्भ की शर्तों पर सहमति व्यक्त की , जिसका लक्ष्य वर्ष के भीतर समझौते को अंतिम रूप देना है।
  - अपेक्षित परिणाम: वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार का विस्तार, निवेश प्रोत्साहन, आपूर्ति-श्रृंखला सहयोग, और आर्थिक विविधीकरण।

NEXT IAS

- दोनों देश 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को दोगुना करने का लक्ष्य रखते हैं।
- **सुरक्षा सहयोग:** संयुक्त वक्तव्य में आतंकवाद-रोधी, हिंसक उग्रवाद का सामना, संगठित अपराध और खुफिया साझाकरण में सहयोग को सुदृढ़ करने की योजना पर बल दिया गया।
    - दोनों पक्षों ने आतंकवाद-रोधी संयुक्त कार्य समूह की शीघ्र बैठक बुलाने पर सहमति व्यक्त की।

भारत के लिए महत्व

- **परमाणु ईंधन सुरक्षा को सुदृढ़ करना:** भारत के असैन्य परमाणु रिएक्टरों के लिए स्थिर ईंधन आपूर्ति सुनिश्चित होती है।
    - यह भारत की परमाणु ऊर्जा क्षमता को 9 GW से 2047 तक 100 GW तक बढ़ाने की योजना को समर्थन देता है।
    - भारत की ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ करता है और निम्न-कार्बन ऊर्जा उत्पादन को प्रोत्साहित करता है।
    - यह समझौता ईंधन की कमी या भू-राजनीतिक व्यवधानों से जुड़े जोखिमों को कम करता है।
- **यूरेनियम स्रोतों का विविधीकरण:** यह समझौता भारत की व्यापक रणनीति का हिस्सा है, जिसके अंतर्गत यूरेनियम आयात को विविध बनाया जा रहा है।
    - भारत पहले से ही कज़ाख़स्तान, उज़्बेकिस्तान, रूस से यूरेनियम आयात करता है और अब कनाडा से भी दीर्घकालिक अनुबंध के तहत आयात करेगा।
    - भविष्य में भारत ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका से भी यूरेनियम प्राप्त कर सकता है, और भारतीय कंपनियाँ विदेशों में खनन अवसर खोज रही हैं।
    - विविधीकरण ऊर्जा सुरक्षा और आपूर्ति लचीलापन बढ़ाता है।
- **सामरिक साझेदारी:** एक प्रमुख G7 देश के साथ सहयोग को सुदृढ़ करता है।
- **आर्थिक लाभ:** CEPA के माध्यम से व्यापार, निवेश और प्रौद्योगिकी सहयोग में वृद्धि की संभावना।
- **वैश्विक जलवायु लक्ष्य:** भारत की निम्न-कार्बन ऊर्जा और नवीकरणीय संक्रमण प्रतिबद्धताओं को समर्थन।

भारत यूरेनियम आयात पर क्यों निर्भर है?

- **घरेलू यूरेनियम का निम्न-ग्रेड:** यद्यपि भारत के पास यूरेनियम भंडार हैं, परंतु अयस्क की गुणवत्ता अपेक्षाकृत कम है, जिसमें यूरेनियम की मात्रा 0.02% से 0.45% तक होती है, जबकि वैश्विक औसत 1–2% है।
    - इसके विपरीत, कनाडा की कुछ खदानों में अयस्क की गुणवत्ता 15% तक होती है, जिससे खनन अत्यधिक किफायती हो जाता है।
- **आयात निर्भरता:** घरेलू भंडार की निम्न गुणवत्ता के कारण:
    - भारत की 70% से अधिक यूरेनियम आवश्यकता आयात से पूरी होती है।
    - भारत प्रतिवर्ष लगभग 1,500–2,000 टन यूरेनियम का उपभोग करता है।
    - 2025 में आवश्यकता लगभग 1,884 टन थी।
    - घरेलू खनन विस्तार के बावजूद, भारत भविष्य की मांग का केवल लगभग 30% ही घरेलू स्तर पर पूरा कर पाएगा।

• RELIANCE ON IMPORTED URANIUM

India's uranium imports in previous years

Year	Company, Country	Quantity (metric tonnes)
2020-21	Kazatomprom (Kazakhstan)	1,000
2020-21	Cameco (Canada)	1,000
2023-24	Navoiyuran (Uzbekistan)	350
2024-25	Navoiyuran (Uzbekistan)	250

SOURCE: DEPARTMENT OF ATOMIC ENERGY IN RESPONSE TO A PARLIAMENT QUESTION

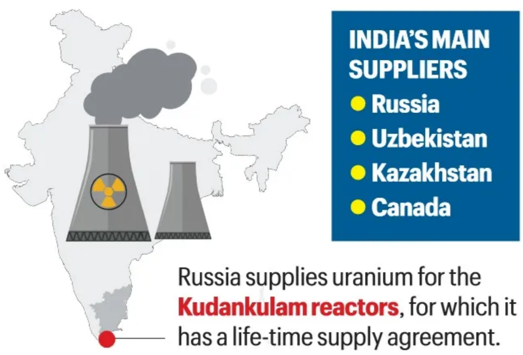

भारत में घरेलू यूरेनियम उत्पादन

- **प्रमुख खनन क्षेत्र:** वर्तमान में यूरेनियम खनन मुख्यतः झारखंड और आंध्र प्रदेश में केंद्रित है।
  - सात खदानें वर्तमान में संचालित हैं, जिन्हें मुख्यतः *यूरेनियम कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (UCIL)* प्रबंधित करता है।
  - अन्य राज्यों में मेघालय, राजस्थान और तेलंगाना में भी भंडार पाए जाते हैं।
- **यूरेनियम भंडार:** कुल यूरेनियम अयस्क भंडार: लगभग 4.3 लाख टन।
  - UCIL खदानों को आवंटित भंडार: 80,000 टन से अधिक।
  - इनमें से लगभग 40% पहले ही निकाले जा चुके हैं, जिससे नए अन्वेषण और विविध आयात की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

भारत का तीन-चरणीय परमाणु कार्यक्रम

- **चरण 1: प्रेसराइज्ड हेवी वाटर रिएक्टर (PHWRs):** प्राकृतिक यूरेनियम को ईंधन के रूप में उपयोग करते हैं और उप-उत्पाद के रूप में प्लूटोनियम उत्पन्न करते हैं।
  - भारत के अधिकांश वर्तमान परमाणु रिएक्टर इसी चरण में आते हैं।
- **चरण 2: फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (FBRs):** प्लूटोनियम-आधारित ईंधन का उपयोग करते हैं और उपभोग से अधिक विखंडनीय पदार्थ उत्पन्न करते हैं।
  - भारत का *प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (PFBR)* कलपक्कम में संचालन के निकट है।
- **चरण 3: थोरियम-आधारित रिएक्टर:** थोरियम का उपयोग कर यूरेनियम-233 ईंधन उत्पन्न करते हैं।
  - दीर्घकालिक ऊर्जा स्वतंत्रता प्राप्त करने का लक्ष्य।
  - भारत के पास विश्व के सबसे बड़े थोरियम भंडारों में से एक है, जिससे यह चरण भविष्य की ऊर्जा सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आगामी चुनौतियाँ

- खालिस्तानी गतिविधियों और निज्जर मामले से संबंधित राजनयिक तनाव।
- दोनों देशों में घरेलू राजनीतिक दबाव।
- व्यापार वार्ताओं के क्रियान्वयन में चुनौतियाँ।
- तीन-चरणीय परमाणु कार्यक्रम में धीमी प्रगति।
- परमाणु ऊर्जा से संबंधित पर्यावरणीय और सुरक्षा चिंताएँ।
- परमाणु ऊर्जा परियोजनाओं की उच्च लागत।
- सीमित घरेलू यूरेनियम उत्पादन।

निष्कर्ष

- भारत और कनाडा के बीच हाल ही में हुए यूरेनियम आपूर्ति समझौते भारत की महत्वाकांक्षी परमाणु ऊर्जा विस्तार योजनाओं के लिए आवश्यक ईंधन सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
- भारत की दीर्घकालिक रणनीति अपने तीन-चरणीय परमाणु कार्यक्रम के माध्यम से थोरियम-आधारित रिएक्टरों के विकास पर केंद्रित है, जबकि घरेलू भंडार की निम्न गुणवत्ता के कारण आयात प्रमुख भूमिका निभाते रहेंगे।
- यदि यह रणनीति सफलतापूर्वक लागू होती है, तो यह भारत की ऊर्जा सुरक्षा को उल्लेखनीय रूप से बढ़ा सकती है, कार्बन उत्सर्जन को कम कर सकती है, और वैश्विक ऊर्जा परिदृश्य में भारत की सामरिक स्वायत्तता को सुदृढ़ कर सकती है।

स्रोत: IE

एंथ्रॉपिक–अमेरिकी रक्षा विभाग के बीच एआई सुरक्षा पर टकराव

संदर्भ

- अमेरिकी रक्षा विभाग द्वारा एआई कंपनी *एंथ्रॉपिक* को कथित रूप से ब्लैकलिस्ट किए जाने के बाद विवाद उत्पन्न हुआ है। कंपनी ने अपने एआई सिस्टम को घरेलू निगरानी और स्वायत्त हथियार अनुप्रयोगों के लिए सक्षम करने से मना कर दिया था।
    - इस घटना ने एआई नैतिकता, सैन्य उपयोग और शासन मानकों पर वैश्विक परिचर्चा को शुरू कर दिया है।

सैन्य एआई उपयोग के क्षेत्र

- **स्वायत्त हथियार प्रणाली:** ऐसे हथियार जो बिना मानवीय हस्तक्षेप के लक्ष्य चुनने और उन पर हमला करने में सक्षम हों।
- **निगरानी और खुफिया:** उपग्रह चित्रों, सिग्नल इंटेलिजेंस और चेहरे की पहचान का एआई-आधारित विश्लेषण।
    - *उदाहरण:* अमेरिकी सेना का *प्रोजेक्ट मेवेन* ड्रोन चित्रों का विश्लेषण कर संभावित खतरों की पहचान करता है।
- **साइबर युद्ध:** एआई-आधारित साइबर हमलों की पहचान और प्रतिक्रिया।
- **लॉजिस्टिक्स और निर्णय समर्थन:** पूर्वानुमानित रखरखाव, सैनिकों की तैनाती की योजना और युद्धक्षेत्र सिमुलेशन।

विवाद से उत्पन्न प्रमुख मुद्दे

- **राज्य सुरक्षा बनाम नैतिक उपयोग:** सरकारें राष्ट्रीय सुरक्षा और तकनीकी प्रभुत्व को प्राथमिकता देती हैं, जबकि एआई कंपनियाँ नैतिक उपयोग एवं दीर्घकालिक सुरक्षा जोखिमों पर बल देती हैं।
    - इससे सार्वजनिक शक्ति और निजी नवाचार के बीच तनाव उत्पन्न होता है।
- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सैन्यीकरण:** एआई 21वीं सदी की सैन्य प्रतिस्पर्धा का प्रमुख तत्व बनता जा रहा है, विशेषकर महाशक्तियों के बीच।
    - *उदाहरण:* अमेरिका–चीन तकनीकी प्रतिद्वंद्विता में एआई, सेमीकंडक्टर और स्वायत्त हथियार शामिल हैं।
- **सैन्य एआई में शासन अंतराल:** वर्तमान में एआई हथियारों को नियंत्रित करने वाली कोई व्यापक वैश्विक संधि नहीं है।
    - *जिनेवा कन्वेंशन* और *संयुक्त राष्ट्र* की घातक स्वायत्त हथियार प्रणाली (LAWS) पर चर्चाएँ विद्यमान हैं, परंतु ये ढाँचे एआई-आधारित युद्ध को पूरी तरह संबोधित नहीं करते।
- **एल्गोरिदमिक पक्षपात का जोखिम:** पक्षपाती प्रशिक्षण डेटा या तकनीकी त्रुटियों के कारण एआई मॉडल लक्ष्य की गलत पहचान कर सकते हैं, जिससे नागरिक हताहत हो सकते हैं।
- **द्वि-उपयोग प्रौद्योगिकी चुनौती:** नागरिक उद्देश्यों के लिए विकसित एआई प्रणाली आसानी से सैन्य उपयोग में ढाली जा सकती है, जिससे नियामक चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं।

नैतिक आयाम

- **जिम्मेदारी:** यदि कोई स्वायत्त ड्रोन अस्पताल पर हमला करता है, तो उत्तरदायित्व प्रोग्रामर (कंपनी) पर होगा या कमांडर (राज्य) पर? ब्लैकलिस्टिंग इस "जवाबदेही श्रृंखला" को जटिल बनाती है।
- **उपयोगितावाद:** राज्य तर्क देते हैं कि एआई निगरानी सामूहिक हताहतों (आतंकवाद) को रोकती है। नैतिकता-केन्द्रित कंपनियाँ कहती हैं कि सामूहिक निगरानी गोपनीयता के "सार्वजनिक हित" को नष्ट करती है।
- **न्याय:** पश्चिमी डेटा सेट पर प्रशिक्षित एआई "डिजिटल उपनिवेशवाद" प्रदर्शित कर सकता है, विशेषकर जब इसे वैश्विक दक्षिण के संघर्ष क्षेत्रों में तैनात किया जाए, जिससे अनुचित लक्ष्यीकरण हो सकता है।

भारत की स्थिति और आगे का मार्ग

- एक उभरती शक्ति के रूप में भारत के लिए यह टकराव महत्वपूर्ण सबक प्रस्तुत करता है:

- **सामरिक स्वायत्तता:** भारत अपने *इंटीग्रेटेड थिएटर कमांड्स* के लिए केवल विदेशी एआई मॉडल (क्लाउड, GPT आदि) पर निर्भर नहीं रह सकता। किसी भी "किल स्विच" या नैतिक "रेड लाइन" को विदेशी कंपनी या राज्य द्वारा लागू किया जाना भारत की रक्षा को प्रभावित कर सकता है।
- **एआई में "धर्म" का विकास:** भारत को वैश्विक दक्षिण का नेतृत्व करना चाहिए और एक "मानव-केंद्रित एआई" ढाँचा तैयार करना चाहिए, जो सुरक्षा को *मार्टेंस क्लॉज* (मानवता के नियम) के साथ संतुलित करे।
- **नियामक सैंडबॉक्स:** सैन्य एआई का परीक्षण पृथक वातावरण में होना चाहिए, जहाँ "रेड-टीमिंग" में तकनीकी विशेषज्ञों के साथ-साथ नैतिकताविद भी शामिल हों।

स्रोत: TH

विश्व मोटापा एटलस 2026

संदर्भ

- *विश्व मोटापा एटलस 2026* के अनुसार भारत बच्चों में अधिक वजन या मोटापे से ग्रस्त संख्या के मामले में वैश्विक स्तर पर दूसरे स्थान पर है। यह रिपोर्ट *विश्व मोटापा दिवस* (4 मार्च) को जारी की गई।

परिचय

- *विश्व मोटापा एटलस* एक गैर-व्यावसायिक प्रकाशन है जिसे *विश्व मोटापा महासंघ* द्वारा तैयार किया जाता है। यह वैश्विक आँकड़े, अनुमान और नीतिगत दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो मोटापे की प्रवृत्तियों एवं संबंधित स्वास्थ्य जोखिमों पर प्रकाश डालते हैं।
- रिपोर्ट में उल्लेख है कि बचपन के मोटापे की वृद्धि को 2025 तक रोकने का वैश्विक लक्ष्य पूरा नहीं हो पाया है और अब इसकी समयसीमा 2030 तक बढ़ा दी गई है। हालांकि, अधिकांश देश, जिनमें भारत भी शामिल है, इस लक्ष्य से पीछे हैं।

वैश्विक परिदृश्य

- 5–19 वर्ष आयु वर्ग के प्रत्येक पाँच में से एक (20.7%) बच्चा अधिक वजन या मोटापे से ग्रस्त है, जो 2010 में 14.6% था।
- 2040 तक विश्वभर में लगभग 507 मिलियन बच्चे अधिक वजन या मोटापे से ग्रस्त होने का अनुमान है।
- उच्च BMI वाले 200 मिलियन से अधिक स्कूली बच्चे केवल 10 देशों में केंद्रित हैं। चीन, भारत और अमेरिका में प्रत्येक के पास 10 मिलियन से अधिक मोटापे से ग्रस्त बच्चे हैं।
- बचपन का मोटापा वयस्क रोगों जैसे उच्च रक्तचाप और हृदय रोग का जोखिम बढ़ाता है।
- **2040 तक अनुमानित स्थिति:**
  - 57 मिलियन बच्चे हृदय रोग के प्रारंभिक लक्षण (उच्च ट्राइग्लिसराइड्स) दिखा सकते हैं।
  - 43 मिलियन बच्चों में उच्च रक्तचाप के लक्षण हो सकते हैं।

भारतीय परिदृश्य

- उच्च BMI वाले बच्चों की संख्या में भारत चीन के बाद दूसरे स्थान पर है।
- **2025 के अनुमानित आँकड़े:**
  - 41 मिलियन बच्चे उच्च BMI वाले
  - 14 मिलियन बच्चे मोटापे से ग्रस्त
- **अनुमानित स्वास्थ्य जोखिम (2025–2040):**
  - उच्च रक्तचाप: 2.99 मिलियन → 4.21 मिलियन
  - हाइपरग्लाइसीमिया: 1.39 मिलियन → 1.91 मिलियन
  - उच्च ट्राइग्लिसराइड्स: 4.39 मिलियन → 6.07 मिलियन
  - MASLD (पूर्व में NAFLD): 8.39 मिलियन → 11.88 मिलियन
- **जीवनशैली और पोषण संबंधी चिंताएँ:**
  - 74% किशोर (11–17 वर्ष) अनुशंसित शारीरिक गतिविधि स्तर को पूरा नहीं करते।

- केवल 35.5% स्कूली बच्चों को विद्यालय भोजन प्राप्त होता है।
- 32.6% शिशु (1–5 माह) अपर्याप्त स्तनपान का अनुभव करते हैं।

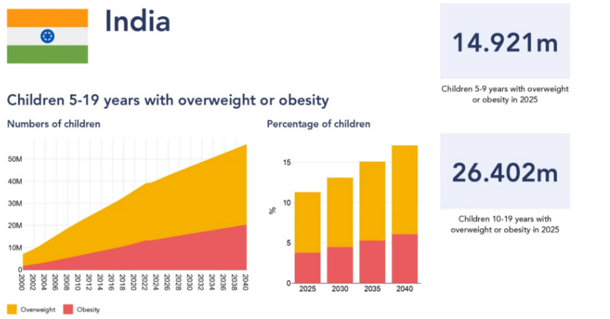

India also ranks first within the WHO South-East Asia Region with more than 45 million young people aged 0–19 overweight or living with obesity.

प्रभाव / चुनौतियाँ

- **गैर-संचारी रोगों (NCDs) का बढ़ता बोझ:** NCDs वैश्विक स्तर पर मृत्यु का प्रमुख कारण हैं, जो प्रतिवर्ष 43 मिलियन से अधिक लोगों की जान लेते हैं।
- **आर्थिक और उत्पादकता हानि:** 2019 में भारत में मोटापा और अधिक वजन की वार्षिक आर्थिक लागत $28.95 बिलियन (₹1,800 प्रति व्यक्ति), या GDP का 1.02% थी। पर्याप्त हस्तक्षेप न होने पर अनुमान है कि 2030 तक यह भार ₹4,700 प्रति व्यक्ति (GDP का 1.57%) तक बढ़ सकता है।
- **जीवनशैली और शहरीकरण कारक:** शहरी क्षेत्रों में लंबे समय तक रहने से मोटापे का जोखिम बढ़ता है।
    - ≤5 वर्ष: 1.91 गुना अधिक
    - 6–10 वर्ष: 2.05 गुना अधिक
    - 10 वर्ष: 2.40 गुना अधिक

सरकारी पहल

- **पोषण अभियान (राष्ट्रीय पोषण मिशन):** बच्चों, किशोरों और महिलाओं के पोषण परिणामों में सुधार हेतु पोषण-संबंधी योजनाओं का एकीकरण।
- **फिट इंडिया मूवमेंट:** शारीरिक गतिविधि, फिटनेस संस्कृति और व्यवहार परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया गया।
- **ईट राइट इंडिया:** *भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण* की पहल, जो स्वस्थ आहार, खाद्य सुरक्षा और अस्वास्थ्यकर भोजन की खपत में कमी को प्रोत्साहित करती है।
- **स्कूल स्वास्थ्य और कल्याण कार्यक्रम:** विद्यालय छात्रों में स्वास्थ्य शिक्षा, शारीरिक गतिविधि और जीवनशैली जागरूकता को बढ़ावा देता है।

निष्कर्ष / आगे की राह

- *विश्व मोटापा एटलस 2026* यह दर्शाता है कि बचपन का मोटापा भारत में एक प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती बनता जा रहा है।
- इससे निपटने के लिए प्रारंभिक रोकथाम, स्वस्थ आहार, नियमित शारीरिक गतिविधि और अस्वास्थ्यकर खाद्य विपणन पर सख्त नियमन आवश्यक है।
- स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण नीतियों को शामिल करने वाला बहु-क्षेत्रीय दृष्टिकोण भविष्य में NCDs के भार को कम करने और भारत की युवा जनसंख्या के स्वास्थ्य की रक्षा करने में महत्वपूर्ण होगा।

स्रोत: TH

संक्षिप्त समाचार

गोलिस्तान पैलेस

समाचार में

- तेहरान का *गोलिस्तान पैलेस*, जो यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है, अमेरिकी–इज़राइल हवाई हमलों से उत्पन्न आघातों और मलबे के कारण क्षतिग्रस्त हुआ।

परिचय

- गोलिस्तान पैलेस एक ऐतिहासिक शाही परिसर है, जो क़ाजार वंश का आधिकारिक निवास रहा और तेहरान के सबसे पुराने ऐतिहासिक स्मारकों में से एक है।
- इस परिसर की उत्पत्ति *सफ़वीद वंश* से जुड़ी है, जब तेहरान प्रथम बार राजनीतिक केंद्र के रूप में महत्व प्राप्त करने लगा। बाद के शासकों ने इस महल परिसर का विस्तार और नवीनीकरण किया।
- गोलिस्तान पैलेस पारंपरिक फ़ारसी वास्तुकला और 19वीं सदी में आए पश्चिमी प्रभावों का मिश्रण दर्शाता है।

- यूनेस्को ने इसे 2013 में सूचीबद्ध किया। यह सांस्कृतिक अभिलेखागार, प्रारंभिक ईरानी फोटोग्राफी और ऐतिहासिक राज्याभिषेक स्थलों को संरक्षित करता है।

महत्वपूर्ण संरचनाएँ

- **शम्स-ओल-एमारेह (एडिफ़िस ऑफ़ द सन):** महल परिसर की सबसे प्रसिद्ध इमारतों में से एक।
    - इसे 1860 के दशक में नासिर अल-दीन शाह क़ाजार ने बनवाया।
- **मार्बल थ्रोन हॉल (तख़्त-ए-मरमर):** शाही राज्याभिषेक और आधिकारिक समारोहों के लिए प्रयुक्त।
- **मिरर हॉल:** विस्तृत दर्पण मोज़ाइक और भव्य सजावट के लिए प्रसिद्ध।
- **संग्रहालय भवन:** परिसर में कई संग्रहालय हैं, जिनमें क़ाजार काल की पेंटिंग्स, शाही उपहार और कलाकृतियाँ प्रदर्शित हैं।

स्रोत: TH

जुलाई के पश्चात एल नीनो की उच्च संभावना: WMO

समाचार में

- *विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO)* ने अनुमान लगाया है कि वर्तमान *ला नीना* के *ENSO-न्यूट्रल* स्थिति में बदलने के बाद 2026 की दूसरी छमाही में *एल नीनो* विकसित होने की उच्च संभावना है।

एल नीनो–सदर्न ऑस्सिलेशन (ENSO)

- यह एक आवर्ती प्राकृतिक घटना है, जिसमें भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर के तापमान में उतार-चढ़ाव और वायुमंडलीय परिवर्तनों का संयोजन होता है। इसका विश्व के विभिन्न हिस्सों में जलवायु पैटर्न पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।
- **चरण:**
    - **एल नीनो:** मध्य और पूर्वी उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर का असामान्य ऊष्मीकरण। यह मानसूनी वर्षा को दबाता है।
        - यह पूर्वी पवनों को कमजोर या उलट देता है; इंडोनेशिया में वर्षा घटाता है और उष्णकटिबंधीय प्रशांत में बढ़ाता है।
    - **ला नीना:** मध्य और पूर्वी उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर का शीतलन; पूर्वी पवनों को सुदृढ़ करता है; इंडोनेशिया में वर्षा बढ़ाता है तथा मध्य प्रशांत में घटाता है।
    - **न्यूट्रल:** समुद्री सतह का तापमान औसत के आसपास रहता है; न तो एल नीनो और न ही ला नीना हावी होते हैं, यद्यपि कभी-कभी महासागर एवं वायुमंडलीय स्थितियाँ पूरी तरह मेल नहीं खातीं।
- **भारत पर प्रभाव:** भारत में *एल नीनो* घटित होने पर वर्षा घटती है और तापमान बढ़ता है, जबकि *ला नीना* अधिक वर्षा एवं कम तापमान से जुड़ा होता है।

स्रोत: IE

समुद्र के क़ानून पर संयुक्त राष्ट्र अभिसमय (UNCLOS)

संदर्भ

- ईरानी फ्रिगेट *IRIS Dena* को श्रीलंका के दक्षिण-पश्चिमी तट पर अमेरिकी नौसेना की पनडुब्बी द्वारा टॉरपीडो हमले में डूबा हुआ बताया गया।

UNCLOS के बारे में

- *UNCLOS* एक व्यापक अंतर्राष्ट्रीय संधि है, जो महासागरों और समुद्रों के शासन हेतु कानूनी ढाँचा स्थापित करती है।
- 1982 में *मोंटेगो बे, जमैका* में अपनाई गई और 1994 में लागू हुई।
- यह परिभाषित करती है:
    - तटीय राज्यों की समुद्री सीमाएँ
    - समुद्री क्षेत्रों में राज्यों के अधिकार और कर्तव्य
    - नौवहन, संसाधन दोहन और पर्यावरण संरक्षण के नियम
- इसके व्यापक दायरे के कारण इसे प्रायः "महासागरों का संविधान" कहा जाता है।

- **सदस्यता:** 168 पक्षकार, जिनमें यूरोपीय संघ शामिल है।
    - भारत, जापान और चीन जैसे देश इसके पक्षकार हैं।
    - संयुक्त राज्य अमेरिका ने इस पर हस्ताक्षर किए हैं, लेकिन इसे अनुमोदित नहीं किया है।

UNCLOS के अंतर्गत समुद्री क्षेत्र

UNCLOS महासागरों को कई कानूनी क्षेत्रों में विभाजित करता है, जिनमें अलग-अलग अधिकार और जिम्मेदारियाँ होती हैं।

- **क्षेत्रीय समुद्र :** तटीय राज्य की आधार रेखा से 12 समुद्री मील तक। तटीय राज्य को पूर्ण संप्रभुता प्राप्त होती है। विदेशी जहाजों को *निर्दोष मार्ग* का अधिकार होता है।
- **सन्निहित क्षेत्र :** आधार रेखा से 12–24 समुद्री मील तक। तटीय राज्य सीमा शुल्क, आव्रजन, स्वच्छता और सुरक्षा संबंधी कानून लागू कर सकता है।
- **विशेष आर्थिक क्षेत्र (EEZ):** आधार रेखा से 200 समुद्री मील तक। तटीय राज्य को प्राकृतिक संसाधनों पर विशेष अधिकार प्राप्त होते हैं। अन्य राज्यों को नौवहन और उड़ान की स्वतंत्रता रहती है।
- **उच्च समुद्र :** किसी भी राज्य के EEZ से बाहर के क्षेत्र। किसी देश की संप्रभुता नहीं होती। इन्हें अंतर्राष्ट्रीय कानून और UNCLOS सिद्धांतों द्वारा शासित किया जाता है।

स्रोत: TH

भारत द्वारा जापान के साथ द्विपक्षीय स्वैप व्यवस्था का नवीनीकरण

समाचार में

- भारत ने 28 फरवरी, 2026 से प्रभावी जापान के साथ अपनी *द्विपक्षीय स्वैप व्यवस्था (BSA)* का नवीनीकरण किया है।

परिचय

- मुद्रा स्वैप में पूर्व-निर्धारित शर्तों के अंतर्गत एक मुद्रा में नकदी प्रवाह को दूसरी मुद्रा में परिवर्तित किया जाता है, यहाँ रुपये–येन–यूएसडी रूपांतरण को सुगम बनाया जाता है। यह एक सुरक्षा कवच की तरह कार्य करता है, जो मुद्राओं पर सट्टा हमलों को रोकता है और RBI के विनिमय दर प्रबंधन को सुदृढ़ करता है।
- भारत कई *मुद्रा स्वैप व्यवस्थाएँ (CSAs)* बनाए रखता है, जिनमें SAARC ढाँचा (2024–27, कुल $2 बिलियन), भारत–यूएई ($50 बिलियन समतुल्य), और भारत–श्रीलंका ($4 बिलियन) शामिल हैं। जापान के साथ यह समझौता उनके *विशेष सामरिक साझेदारी* के अंतर्गत भारत–जापान आर्थिक संबंधों की गहराई को दर्शाता है।
- यह नवीनीकरण IMF सुविधाओं का पूरक है, निवेशकों के विश्वास को बढ़ाता है और क्षेत्रीय वित्तीय लचीलापन को समर्थन देता है, जबकि पूर्व समझौतों से 75 बिलियन अमेरिकी डॉलर की सीमा अपरिवर्तित रहती है।

स्रोत: AIR

अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA)

समाचार में

- *अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA)* के महानिदेशक ने कहा है कि ईरान द्वारा परमाणु बम बनाने का कोई प्रमाण नहीं मिला है।

परिचय

- IAEA की स्थापना 1957 में संयुक्त राष्ट्र के अंतर्गत "एटम्स फ़ॉर पीस" संगठन के रूप में की गई थी और यह अपने संस्थापक *संविधान* द्वारा शासित है।
- यह संयुक्त राष्ट्र का परमाणु प्रहरी है, जो शांतिपूर्ण परमाणु ऊर्जा उपयोग को बढ़ावा देता है और प्रसार-रोधी उपायों की पुष्टि करता है।
- इसका मुख्यालय वियना में है। इसे 2005 में *नोबेल शांति पुरस्कार* परमाणु प्रसार-रोधी प्रयासों के लिए प्रदान किया गया।
- IAEA के 178 सदस्य राष्ट्र हैं, जिनमें भारत भी संस्थापक सदस्य है।

स्रोत: TH

न्यूक्लिक एसिड टेस्ट (NAT)

समाचार में

- भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने एक याचिका पर विचार करने की सहमति दी है, जिसमें सभी रक्त बैंकों में *न्यूक्लिक एसिड टेस्टिंग (NAT)* को अनिवार्य करने की मांग की गई है। न्यायालय ने सुरक्षित रक्त संक्रमण को *अनुच्छेद 21* के अंतर्गत जीवन के अधिकार का हिस्सा माना है।

NAT के बारे में

- NAT एक आणविक तकनीक है, जो वायरल RNA या DNA को सीधे बढ़ाती और पहचानती है। यह HIV, हेपेटाइटिस B और C जैसी संक्रमणों की पहचान *एंटीबॉडी-आधारित ELISA परीक्षणों* से पहले कर सकती है।
- यह संक्रमण के *विंडो पीरियड* के दौरान, जब एंटीबॉडी उपस्थित नहीं होते, स्क्रीनिंग करके रक्त संक्रमण से फैलने वाले संक्रमणों (TTIs) के जोखिम को कम करती है।

स्रोत: TH

प्रोजेक्ट हनुमान(HANUMAN)

समाचार में

- *प्रोजेक्ट हनुमान* आंध्र प्रदेश सरकार की एक नई पहल है, जिसका उद्देश्य उन्नत बचाव, निगरानी और सामुदायिक संरक्षण उपायों के माध्यम से मानव–वन्यजीव संघर्षों को कम करना है।

परिचय

- इसका पूरा नाम है *वन्यजीवों की निगरानी, सहायता और देखभाल के लिए उपचार और पोषण इकाइयाँ।*
- यह परियोजना उन वन-सीमांत क्षेत्रों को लक्षित करती है, जहाँ हाथियों के हमले और साँप के काटने जैसी घटनाएँ अधिक होती हैं। इसका उद्देश्य वैज्ञानिक उपकरणों एवं स्थानीय सहभागिता के माध्यम से सह-अस्तित्व को बढ़ावा देना है।

मुख्य विशेषताएँ

- 100 GPS-सक्षम वाहन, 93 त्वरित प्रतिक्रिया इकाइयाँ और 7 वन्यजीव एम्बुलेंस त्वरित बचाव और सहायता के लिए।
- चार बचाव केंद्र: विशाखापट्टनम, राजमहेंद्रवरम, तिरुपति और बिरलुट (या बायरलुटी)।
- गाँव स्तर पर 'वज्र' स्वयंसेवी दल, छोटे घटनाओं जैसे साँप बचाव के लिए।
- पशु गतिविधियों की निगरानी और बस्तियों को समयपूर्व चेतावनी देने हेतु एआई प्रणाली।
- संघर्षों की रिपोर्टिंग और समन्वय के लिए *हनुमान ऐप*।
- उन्नत क्षतिपूर्ति: मानव मृत्यु पर ₹10 लाख, चोट पर ₹2 लाख, पशुधन के लिए बाज़ार मूल्य।

स्रोत: DTE

सुंगुड़ी साड़ियाँ

समाचार में

- *सुंगुड़ी साड़ियाँ* विशिष्ट और पर्यावरण-अनुकूल फैशन की खोज करने वाले उपभोक्ताओं के बीच लोकप्रियता प्राप्त कर रही हैं।

सुंगुड़ी साड़ियाँ

- सुंगुड़ी साड़ियाँ पारंपरिक सूती साड़ियाँ हैं, जिन्हें *सौराष्ट्र समुदाय* ने परिपूर्ण किया। यह समुदाय 17वीं सदी में गुजरात से मदुरै (तमिलनाडु) आया था।
- इन साड़ियों में जटिल *टाई-एंड-डाई* पैटर्न होते हैं, जो रात्रि आकाश से प्रेरित हैं। प्रत्येक साड़ी सूती कपड़े पर बुनी जाती है, जिसमें ज़री की किनारी होती है।
- इसे हाथ से बाँधा, रंगा, धोया, स्टार्च किया और धूप में सुखाया जाता है। प्रायः इसमें 15,000 से अधिक संवेदनशील सफेद बिंदु दिखाई देते हैं।
- यह प्रक्रिया 15 दिनों से अधिक समय लेती है और सांस लेने योग्य, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध परिधान तैयार करती है, जिन्हें पीढ़ियों से सराहा जाता है।
- *मदुरै सुंगुड़ी साड़ी* को दिसंबर 2005 में *भौगोलिक संकेतक (GI)* टैग प्राप्त हुआ।

स्रोत :TH

NEXT IAS